प्रातः क्लास 25-11-68 ओमशान्ति मातेश्वरी शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप शिव बैठकर अपने रूहानी बच्चों शालीग्रामों को समझा रहे हैं। क्या समझा रहे हैं? सृष्टि के आदि मध्य अन्त का सभी राज समझाते हैं। और यह समझाने वाला एक ही है। और तो जो भी आत्मायें अथवा शालीग्राम है सभी के शरीर का नाम हैं। बाकी तो एक ही परमपिता परमात्मा है जिसको शरीर नहीं हैं। उस परम आत्मा का नाम है शिव। पतित-पावन। वही खुद अपने बच्चों को सारे विश्व के आदि मध्य अन्त का राज़ समझा रहे हैं। पार्ट बजाने लिये तो सभी यहां ही आते हैं। यह भी समझाया है विष्णु के दो रूप हैं। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। यह सभी बाप बैठ समझाते हैं। बाप कब आते हैं? जब कि नई सृष्टि की स्थापना होती हैं। और पुरानीका विनाश होना है जरूर। बच्चे जानते हैं नई दुनिया में एक आदि सनातन देवी देवताधर्म की स्थापना होती है जरूर। वह तो सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई कर नहीं सकता। वह ही परम पिता परमात्मा है जिसको परमात्मा कहा जाता हैं। उनका नाम है शिव। उनका शरीर का नाम नहीं पड़ता। और जो भी हैं सभी का शरीर का नाम पड़ता हैं। यह भी समझते हो मुख्य2 जो हैं वह तो सभी आ गये हैं। ड्रामा का चक्र फिरते2 अभी आकर अन्त हुआ है। अन्त में तो बाप ही आना चाहिए। उनकी जयन्ति भी मनाते हैं। शिवजयन्ति मनाते भी इस समय हैं। जब कि दुनिया बदलनी हैं। घोर अंधियारा से घोर सोझरा होना है। बच्चे जानते हैं परमपिता परमात्मा शिव ही एक ही बार पुरुषोत्तम संगम युग पर आते हैं पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना करने। पहले नई दुनिया की स्थापना पीछे पुरानी दुनिया का विनाश होता है। बच्चे समझते हैं पढ़कर हमको होशियार होना है। और दैवीगुण भी धारण करनी है। आसुरी गुण पलटनी है। दैवीगुणा और असुरी गुणों का वर्णन चार्ट में दिखाना होता है। अपने को देखना है हम कोई को तंग तो नहीं करते हैं, झूठ तो नहीं बोलते हैं-श्रीमत के बरखिलाफ तो नहीं चलते हैं। झूठ बोलना किसको तंग करना, किसको दुःख देना यह हैरावण के कायदे। और वह हैं राम के कायदे। श्रीमत और आसुरी मत का गायन भी है। आधा कल्प चलती हैं आसुरी मत। जिससे मनुष्य दुःखी रोगी बन जाते हैं। 5 विकार प्रवेश हो जाते हैं। बाप आकर श्रीमत देते हैं। बच्चे जानते हैं श्रीमत से हमको दैवीगुण मिलते हैं। आसुरी गुण को भूलना है। अगर आसुरी गुण रह जावेंगा तो पद कम हो पड़ेगा और जन्म जन्मान्तर का पाप का बोझा जो सिर पर हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उनका कुछ हिस्सा रह जावेंगा। यह भी समझते हो अभी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। बाप द्वारा अभी दैवी गुण धारण कर नई दुनिया के मालिक बनते हैं। तो सिध होता है पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होनी हाहै। नई दुनिया का स्थापना ब्रह्माकुमार कुमारियां द्वारा होना हैं। यह भी पक्का निश्चय है इसलिये सर्विस पर लगे हुये हैं। कोई न कोई का कल्याण करने मेहनत करते रहते हैं। तुम जानते हो हमारे भाई बहन कितनी सर्विस करते हैं। म्युजियम बनाते हैं। सभी को बाप का परिचय देते रहते हैं। बाप आये हैं तो जरूर पहले2 थोड़ों को ही मिलेगा। फिर वृध्धि को पाते रहेंगे। एक ब्रह्मा द्वारा कितने ब्रह्मा कुमारियां बनते हैं। ब्राह्मण कुल तो जरूर चाहिए। तुम जानते हो हम सभी ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं। शिव बाबा के बच्चे सभी भाई2 हैं। असल में भाई2 हैं फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बनने से भाई बहन बनते हैं। फिर देवता कुल में जावेंगे तो सम्बन्ध की वृध्धि होती जावेंगा। इस समय ब्रह्मा के बच्चे और बच्चियां हैं। तो एक ही कुल हुआ। उनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राजाई न कौरवों की है न पाण्डवों की है। डिनायस्टी तब होती है राजा रानी नम्बरवार गदी पर बैठते हैं। अभी तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। शुरू से लेकर पवित्र डिनायस्टी चली आई है। पवित्र डिनायस्टी देवताओं की चली है। यह अभी स्मृति मिली हैं। बच्चे जानते हैं 5000 वर्ष पहले हैविन था। तो पवित्र डिनाय० थी। इन्हीं के चित्र भी हैं। मंदिर कितना आलीशान बने हुये हैं। और कोई के मंदिर नहीं हैं। इन देवताओं के ही बहुत मंदिर हैं। तो बच्चों को समझाया और सभी की शरीर के नाम बदली होते हैं इनका एक ही नाम है शिव चला आता है। शिवभगवानुवाच। कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। सतयुग आदि में भी

भी इन देवताओं का राज्य था। जो फिर होगा। इस सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं है। बाप सृष्टि के चक्र का नालेज देते हैं। यह चक्र कैसे फिरता है। बाकी और कुछ है नहीं। सूक्ष्मवतन में कुछ ठहर नहीं सकता। यह तो एक साक्षी की रस्म है जो तुम भोग आ दिलगाते हो। अगर ब्रह्मा भी है वह भी एकआबजेक्ट का साक्षी होता है। जैसे विष्णु का साक्षी होता है। वैसे यह भी एकआबजेक्ट हमको ऐसा कर्मातीत अवस्था को पावना है। इसके लिये साक्षी होता है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप बिगर और कोई बाप का परिचय दे न सके। क्योंकि वह तो बाप को जानते ही नहीं। यहां भी बहुत हैं जिनको बुधि में नहीं आता। बाप को कैसे याद करें। पूछते हैं इतनी छोटी बिन्दी उनको याद कैसे करें। शरीर तो बड़ा है ना। उनको ही याद करते रहते हैं। यह भी सिर्फ गायन है। भृकुटि के बीच चमकता है गजब सितारा। अर्थात आत्मा सितारे मिसल है। आत्मा को शालीग्राम भी कहा जाता है। शिवलिंग की भी बड़े रूप में पूजा होती है। जैसे आत्मा को देख नहीं सकते। शिव बाबा भी किसको देखने में आ न सके। शिव बाबा आते हैं चले जाते हैं। कैसे किसको पता पड़े। बिन्दी को तो पहचान भी न सके। भक्ति मार्ग में बिन्दी की पूजा कैसे करे। क्योंकि पहले शिव बाबा की अव्यभिचारी पूजा शुरू होती है ना। तो पूजा के लिये जरूर बड़ा चीज चाहिए। शालीग्राम भी बड़ा अण्डे मिसल बनाते हैं। एक तरफ अंगूठे मिसल है फिर सितारा भी कहते हैं। आसुरी बुधि है ना। अभी तुमको तो एक बात पर ठहरना है। आधा कल्प बड़ी चीज की पूजा की है। अभी फिर बिन्दी समझना है। इसमें मेहनत लगती है। इसलिये पूछते हैं। यह भी समझने की बात है। जैसे आत्मा स्टार मिसल है वैसे परमात्मा भी है। देख नहीं सकते। यह बुधि से जाना जाता है। शरीर में आत्मा प्रवेश करती है जो फिर निकलती है। कोई देख तो नहीं सकता। बड़ी चीज हो तो देखने में भी आवे। बाप भी ऐसे बिन्दी है। परन्तु वह ज्ञान का सागर है। और कोई को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। शास्त्र तो हैं भक्ति मार्ग के। इतने सभी वेद शास्त्र आदि किसने बनाई। कहते हैं व्यास ने बनाई। क्राईस्ट की आत्मा ने कोई शास्त्र बनाया नहीं। यह भी बाद में मनुष्य बैठ बनाते हैं। ज्ञान तो उनमें है नहीं। ज्ञान का सागर है ही बाप। शास्त्रों में ज्ञान और सद्गति की बातें हो नहीं। हरेक धर्म वाला अपने धर्मस्थापक को याद करते हैं। देहधारी को याद करते हैं। क्राईस्ट का भी चित्र है ना। सभी के चित्र हैं। शिव बाबा तो है ही परम आत्मा। अभी तुम समझते हो आत्मायें सभी ब्रदर्स हैं। ब्रदर्स में ज्ञान हो न सके जो किसको ज्ञान देकर और सद्गति करे। सद्गति करने वाला है एक ही बाप। इस समय ब्रदर्स भी हैं और बाप भी है। सारे विश्व का बाप आकर सारे विश्व की आत्माओं को सद्गति देते हैं। विश्व का सद्गति दाता है ही एक बाप। श्री श्री 108 जगद्गुरु कहो अथवा विश्व का गुरु कहो बात एक ही है। अभी तो है आसुरी राज्य। 100% आसुरी बुधि मनुष्यों को है। संगम पर ही बाप आकर यह सभी बातें समझाते हैं। तुम जानते हो बराबर अभी नई दुनिया की स्थापना हो रही है और पुरानी दुनिया का विनाश होना है। यह भी समझाया है पतितपावन एक ही निराकार बाप है। कोई देहधारी पतित-पावन हो न सके। पतित पावन परमात्मा ही है। अगर पतितपावन सीताराम भी कहे तो भी बाप ने समझाया है भक्ति का फल देने भगवान आता है तो सभी सीतायें ठहरी। एक है राम। क्राईस्ट और क्राईडमुभी जो सभी को सद्गति देने वाला है। यह बातें बाप ही समझाते हैं। ड्रामा अनुसार तुम ही फिर 5000 वर्ष बाद यह बातें सुनेंगे। अभी तुम सभी पढ़ रहे हो। स्कूल में कितने टैर पढ़ते हैं। यह सभी ड्रामा बना हुआ है। जिस समय जो पढ़ते हैं जो एक्ट चलती है वही एक्ट फिर कल्प बाद भी होगी। हु बहू 5000 वर्ष बाद फिर पढ़ेंगे। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। जो भी देखेंगे सेकण्ड व सेकण्ड नई चीज दिखाई पड़ेगी। चक्र फिरता रहेगा। नई2 बातें तुम देखते रहेंगे। अभी तुम जानते हो यह 5000 वर्ष का ड्रामा है जो चलता रहता है। इनकी डिटेल तो बहुत हैं। मुख्य2 बातें समझाई जाती हैं। जैसे कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है बाप समझाते हैं मैं सर्वव्यापी नहीं हूं। बाप आकर अपना और अपनी रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय

24-11-67

देते हैं। तुम बच्चे अभी जानते हो बाप कल्प2 आते हैं हमको वरसा देने। यह भी गायन है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। इसमें समझने बहुत अच्छी है। विराटरूप का भी जरूर अर्थ होगा ना। परन्तु सिवाय बाप के कोई समझा न सके। चित्र तो बहुत तो बहुत हैं परन्तु एक की भी समझानी कोई पास है नहीं। ऊंच ते ऊंच एक शिव बाबा उनका ही चित्र है परन्तु जानते ही नहीं। अच्छा फिर सूक्ष्मवतन, उनको तो छोड़ दो। उनकी दरकार ही नहीं। हिस्ट्री जागराफी यहां की समझनी होती है। वह तो है सा0 की बात। जैसे यहां इस बाप बैठ समझाते हैं वैसे सूक्ष्मवतन में कर्मातीत शरीर में बैठ कर इन से मिलते हैं अथवा बोलते हैं। बाकी वहां कोई वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी है नहीं। हिस्ट्री जागराफी यहां की है। बच्चों की बुधि में बैठा हुआ है सतयुग में यह देवी देवतायें थे जिसको 5000 वर्ष हुआ। इन आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कैसे हुई यह कोई नहीं जानते। औरों की तो सभी जानते हैं। किताब आदि भी हैं। लाखों वर्ष की तो बात हो भी नहीं सकता। यह तो बिल्कुल रांग है। परन्तु मनुष्यों की बुधि कुछ काम नहीं करती है। हर बात बाप बैठ समझाते हैं। मीठे2 बच्चों अच्छी रीत धारणा करो। मुख्य बात है बाप की याद। यह तो जानते हो पूज्यात्मा बनते जाते हैं नम्बरवार। रस होता है ना। कोई2 अकेले दौड़ते हैं। कोई जोड़ी को इकट्ठा बांध फिर छोड़ते हैं। यहां भी जो जोड़ी हैं वह इकट्ठे छोड़ी पहनने प्रेक्टीस करते हैं। सतयुग में ऐसे इकट्ठे जोड़ी बन दिखावेंगे। मल नाम रूप तो बदल जाता है। वही शरीर थोड़ेही मिलता है। शरीर तो बदलते रहते हैं। समझते हैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। फीचर्स तो दूसरा होगा। बच्चों को वन्डर लगना चाहिए जो फीचर्स जो एक्टर्स व ऐक्ट्रेस पास हुआ वह फिर हू बहू रिपीट होना है। कितना वन्डरफुल यह बड़ा नाटक है। और कोई समझा नहीं सकते। तुम जानते हो हम पुरुषार्थ करते हैं। नम्बरवार तो बनेंगे ही। सभी तो कृष्ण नहीं बनेंगे। फीचर्स सभी के अलग2 होते हैं। कितना वन्डरफुल नाटक है। एक फीचर्स न मिले दूसरे से। वही खेल हू बहू रिपीट होता रहता है। यह सभी विचार कर आश्चर्य खाना होता है। कैसे वेद का बाप पढ़ाते हैं। जन्म जन्मान्तर तो भक्ति के शास्त्र आदि पढ़ते आये, साधुओं की कथायें आदि भी सुनो। अभी बाप कहते हैं भक्ति का समय पूरा हुआ। अभी भक्तों को भगवान द्वारा फल मिलता है। यह नहीं जानते भगवान कब किस रूप में आवेगा। कब कहते हैं शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिलेगा। कब कहते हैं यहां आवेगा। शास्त्रों से ही अगर काम हो जाता तो फिर बाप को क्यों आना पड़े। शास्त्र पढ़ने से ही भगवान मिल जाये तो बाकी भगवान यहां आकर क्या करेंगे। आधा कल्प तुम यह शास्त्र आदि पढ़ते आये हो। परन्तु फायदा कुछ भी नहीं। गीता का भगवान ही सारे विश्व की सदगति करते हैं। बाकी शास्त्र आदि तो पढ़ते2 तमोप्रधान ही बनते आये हो। तुम बच्चों को सृष्टि का चक्र भी समझाते रहते हैं। और दैवी चलन भी चाहिए। एक तो किसको दुःख न देना है। ऐसे नहीं कोई को विष चाहिए वह देते हो यह कोई दुःख देना है।। ऐसे तो बाप कहते नहीं हैं। कई ऐसे भी बुधु निकलते हैं जो कहते हैं बाबा समझाते हैं किसको दुःख न देना है। अभी यह विष मांगते हैं तो उनको देना चाहिए। नहीं तो यह भी किसको दुःख देना हुआ ना। ऐसे समझने वाले मूढ़मति भी हैं। बाप तो कहते हैं पवित्र जरूर बनना है। आसुरी चलन और दैवी चलन की भी समझ चाहिए ना। मनुष्य तो यह भी नहीं समझते। वह तो कह देते आत्मा निर्लेप है। कुछ भी करो। कुछ भी खाओ पीओ विकर्म में जाओ कोई हर्जा नहीं है। ऐसे भी आसुरी बुधि वाले गुरु लोग होते हैं। महर्षि आदि क्या सिखलाते हैं। कितने को पकड़कर ले आते हैं। बाहर में भी वेजीटेरियन बहुत रहते हैं। जरूर अच्छा है तब तो वेजीटेरीयन बनते हैं। सभी जातों में वैष्णव होते हैं। छी छी चीजें नहीं खाते हैं। मैनारिटी होती है। तुम भी मैनारिटी हो। इस समय तुम कितने थोड़े हो। आहिस्ते2 वृधि को पाते रहेंगे। बच्चों को यही शिक्षा मिलती है दैवी गुण धारण करो। छी छी वस्तु ऐसी कोई हाथ की बनाई हुई नहीं आनी चाहिए। बहुत पूछते हैं बाबा पार्टियों में जाना पड़ता है, मेस का खाना पड़ता है। पार्टी में बड़े2 आफीसरों को इनवाईट करते हैं। तो उसमें मिठाई फ्रूट चाय आदि सभी खाते हैं तो पार्टी करते हैं तो तुमको भी —

खाना पड़े। बाहर वाले खावें और खुद न खावेंगे तो कहेंगे बाबा हमको क्यों खिलाते हो। ऐसे बहुत कहते हैं पार्टियों में जाना पड़ता है। साथ में बैठना पड़ता है, आना जाना होता है। बाप समझाते रहते हैं राजी भी करना है। बड़ा आफीसर है वह खावे और तुम न खाओ यह शोभा नहीं होगी। वह तो जरूर आफर करेंगे। मांस आदि की तो बात ही नहीं। फल आदि है हर्जा नहीं है। चाय पीने में हर्जा नहीं है। तुम बोलेंगे हम किसके हाथ का नहीं पीते हैं, कहेंगे हमको पिलाते हो तुम नहीं पीते हो। यह कहा की बात है। बाबा तो दुनिया रहा भी है ना। बिल्कुल साहूकार साथ भी रहें तो बिल्कुल गरीबों साथ भी रहें हैं। क्योंकि क्वीन क्रिग आदि के साथ भी कनेक्शन में बहुत आये हैं। मुसलमानों साथ भी रहें हैं। क्या 2 खाते थे। अभी तो कोई ऐसी चीज नहीं खाते हैं। किसके लिये अच्छी चीज बनाते हैं तो खाना भी पड़े। सुसर घर जाना और कहना हम कुछ नहीं खावेंगे तो उन्हों को दुःख होगा ना। नाती आवे: सासु ससुरा कुछ खाने लिये देवे मिठाई आदि; भल वह जानते हैं यह पक्का वैष्णव है, शुद्धता से बनाकर देते हैं प्यार से कहते हैं अच्छा और कुछ न खाओ यह चाय पीओ। वा पानी ही पीओ। कोई2 तो पानी भी नहीं पीते हैं। बाबा तो सदैव कहते हैं दुध चाय आदि पीने में हर्जा नहीं है। जैसा2 समय ऐसे युक्ति से चलना है। बाप की याद से ही तुम सारे विश्व को पावन बनाते हो। तो इसकी= चीज को पवित्र नहीं बना सकते हो। गृहस्थ व्यवहार में रहते हो आना जाना तो पड़ता होगा। कोई से काम भी निकालना होता है। बाबा कब मनाही करते कि किसका पानी भी नहीं पीओ= पीओ। हो भी अगर ब्राह्मण कुल के हैं तो उनके क्रोध का तो खाना चाहिए। ब्राह्मण कुल वालों पास भी पानी तक भी नहीं पीते ऐसे भी भी हमारे पास वैष्णव बने हैं बाबा से भी तीखे। वह आदर करते हैं, मैं ब्राह्मणी हूं, हमने अपने हाथ से बनाया है तो भी नहीं लेते। पानी भी नहीं पीते तो वह दिल में कितना नाराज होती होंगी। मुफ्त किसको दुःखी करते हैं, नाराज करते हैं। बाबा ऐसे थोड़े ही कहते हैं किसको नाराज करो। अपने ब्राह्मण कुल हैं उनका भी नहीं लेते हैं। किसको नाराज न करना चाहिए। ऐसे भी बहुत अच्छे2 हैं बाबा के दिल पर चढ़े हुये वह भी नाराज हो पड़ते हैं। कहते हैं हमने अपने हाथ से बनाया है तो भी लेते नहीं। फ्रूट नहीं लेते। टुमच हुआ ना। इनको फिर अहंकार देहअभिमान कहा जाता है। बाप तो ऐसी शिक्षा नहीं देते। बाप तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते जरूर आफीसरों पास दोस्तों पास जाना पड़ेगा, वह आफर करेंगे यहां भी कोई आते हैं तो तुम खातरी करते हो ना। राजी रखना चाहिए। टूमच में न जाना चाहिए। नहीं तो नाम बदनाम होता है। फिर निन्दा होती है ब्रह्माकुमारियां देखो कितना हठ करती हैं। प्रेम से कोई खिलाते हैं तो भी खाते नहीं। बाप भी खाते हैं, बच्चे उनसे भी तीखे चले जाते हैं। बाबा को तो बहुत आकर प्यार से खिलाते हैं तो कब ले लेते हैं। बाबा भी बहुतों को खिलाते हैं। मिटी भी खिलाते हैं। चाय भी हाथ से पिलाते हैं। परन्तु इतने भी की मिटी तो नहीं खा सकेंगे चाय भी नहीं पी सकते हैं। इसलिये बन्द कर दिया। दिन प्रति दिन क्रोध को पाते जावेंगे। बाकी बच्चों रहता बहुत मीठा है। कब भी एक दो को= नफरत से न देखना है। बाप तो समझाने लिये कुछ भी कहेंगे। बाप का तो काम है सुधारना। बड़े भाई का काम है छोटे भाई को सुधारना। समझाना पड़े। थप्पर आदि लगाने की तो बात ही नहीं। समझानी होता है ऐसी चलन से दास दासियां जाकर बनेंगी। सावधानी दी जाती है कल्याण के लिये। बच्चे कहां तंग करते हैं सुधारने लिये थप्पर लगा सकते हैं। यह क्रोध नहीं है। मास्टर बच्चों को सुधारने लिये लकड़ी भी गलाते हैं। वह क्रोध भी नहीं। मार से बच्चे सुधर जाते हैं। कोई खराब आदत होती है तो मार से सुधर जाते हैं। यहां भी बच्चों सुधारते रहते हैं। देवगुण धारण करने लिये सुधारते हैं। देवताओं जैसा कि= गुण2 बनना है। बच्चों को कितना स्ट्रक्टन होना चाहिए। जिससे कोई नाराज हो। ब्राह्मण है तो खाने करने में कोई हर्जा नहीं है। अगर ऐसे स्ट्रीट रहेंगे तो फिर कुत्तों को। फिर मुंह देखना है क्या। यह अच्छा नहीं है। अच्छा रहना बच्चों को रहना बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।